بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ 21.11.14 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

जो कर्म हैं अब दुनिया के और ख़ुदा से जिस प्रकार दूर हट रहे हैं और न केवल दूर हट रहे हैं, वे उन कठिनाइयों को फिर बुलाने के लिए स्वंय उनके अनुसार जल्दी कर्म कर रहे हैं। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए और अहमदियों को दुआएं करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमें अपने कर्मों को ठीक रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

मैं इस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ कथन तथा लेख पेश करूंगा जिनमें आपने दुआ की क़बूलियत की घटनाएं बयान की हैं। कुछ घटनाएं हैं और निशानों का भी वर्णन है तथा अल्लाह तआला के समर्थन का भी वर्णन किया है और नसीहत फ़रमाई है कि अल्लाह तआला ने इस ज़माने में मुझे भेजा है, अपने दूत को भेजा है। इसकी बातों को सुनो कि इसी में बरकत है और इस सिलसिले की प्रगति ख़ुदा तआला के विधानों में से एक विधान है और इसके मानने से ही इंसान की मुक्ति है। एक स्थान पर नवाब अली मुहम्मद खान साहब रईस लुधियाना के एक पत्र का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि एक बार नवाब अली मुहम्मद खान साहब मरहूम रईस लुधियाना ने मेरी ओर पत्र लिखा कि मेरे कुछ आर्थिक स्रोत बन्द हो गए हैं आप दुआ करें कि खुल जावें। (कुछ कारोबारी परेशानियां थीं, फ़रमाते हैं) जब मैं ने दुआ की तो मुझे इलहाम हुआ कि खुल जाएंगे। मैं ने पत्र द्वारा उनको सूचना दे दी। फिर केवल दो चार दिन के बाद वे आर्थिक साधन खुल गए और उनका विश्वास दृढ़ हो गया। फिर एक बार उन्होंने अपनी कुछ गुप्त समस्याओं के सम्बंध में मेरी ओर एक पत्र भेजा और जिस पल उन्होंने पत्र डाक में डाला उसी पल मुझे इलहाम हुआ कि इस विषय के सम्बंध उनकी ओर से आने वाला है। तब मैं ने बिना देर किए उनकी ओर यह पत्र लिखा कि इस विषय के सम्बंध में आप पत्र भेजेंगे, और दूसरे दिन वह पत्र आ गया और जब मेरा ख़त उनको मिला तो वे आश्चर्य चकित रह गए कि यह परोक्ष की सूचना किस प्रकार मिल गई। क्यूंकि मेरे इस भेद की सूचना किसी को भी न थी। और उनका विश्वास इतना बढ़ा कि मुहब्बत तथा इरादत में फ़ना हो गए। जब वज़ीर सैय्यद मुहम्मद हसन साहब से भेंट हुई संयोग वश बातों बातों में वज़ीर साहब तथा नवाब साहब का मेरे अदभुत चमत्कारों तथा निशानों के बारे में परस्पर वार्तालाप हुआ। तब नवाब साहब मरहूम ने एक छोटी सी पुस्तिका अपनी जेब में से निकाल कर वज़ीर साहब के सामने पेश कर दी और कहा कि मेरे ईमान और इरादत का कारण तो ये दो भविष्य वाणियां हैं जो इस पुस्तिका में उल्लिखित हैं। और जब कुछ समय पश्चात उनकी मृत्यु से एक दिन पहले मैं उनकी बीमारी का हाल चाल पूछने लुधियाना में उनके मकान पर गया तो वे अपने भीतर के कमरे में चले गए और वही छोटी किताब ले आए और कहा कि यह मैं ने बड़ी संभाल कर रखी है और इसको देखने से मैं संतुष्टि पाता हूँ तथा वे स्थान दिखाए जहां दोनों भविष्य वाणियां लिखी हुई थीं। फिर आप फ़रमाते हैं एक स्थान पर कि कुछ वर्ष हुए हैं कि सेठ अब्दुर्रहमान साहब ताजिर मद्रास जो जमाअत में प्रथम श्रेणी के निष्ठावानों में से हैं, क़ादियान में आए थे और उनके व्यवसाय के सम्बंध में कोई कठिनाई हो गई थी। उन्होंने दुआ के लिए निवेदन किया तब यह इलहाम हुआ जो निम्नलिखित है- क़ादिर है वह बारगाह टूटा काम बनावे। बना बनाया तोड़ दे कोई उसका भेद न पावे। इस इलहामी कथन का यह अर्थ था कि ख़ुदा तआला टूटा हुआ काम बना देगा परन्तु कुछ समय बाद बना बनाया तोड़ देगा। फ़रमाते हैं कि चुनाचे यह इलहाम क़ादियान में ही सेठ साहब को सुनाया गया और थोड़ दिन ही बीते थे कि ख़ुदा तआला ने उनके व्यवसायिक साधनों में रौनक़ पैदा कर दी। और फिर कुछ समय के पश्चात वह बना बनाया काम टूट गया। इलहाम के अनुसार पहले तो प्रगति हुई कारोबार में तथा फिर कुछ समय पश्चात धीरे धीरे उसमें ख़राबी पैदा होनी आरम्भ हुई और कारोबार फिर ख़राब हो गया।

फिर आप फ़रमाते हैं अपने विषय में ही एक स्थान पर कि मुझे दो बीमारियां लम्बे समय से थीं। एक तो सिर का दर्द जिसके कारण मैं बड़ा व्याकुल हो जाता था तथा बड़ी भयानक कठिनाइयां पैदा हो जाती थीं और यह बीमारी लगभग 25 वर्षों तक मुझे रही

और इसके साथ सिर में चक्कर आना भी जुड़ गया और वैद्यों ने लिखा कि इन बीमारियों का अन्तिम परिणाम मिर्गी होता है। अतः मेरे बड़ भाई मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर लगभग दो महीने तक इसी बीमारी के कारण मिर्गी के रोग में फंस गए (अर्थात मिर्गी के दौरे उनको पड़ने लगे और इसी कारण उनका देहांत हो गया) अतः मैं दुआ करता रहा कि ख़ुदा तआला इन रोगों से मुझे सुरक्षित रखे। एक बार कश्फ़ की स्थिति में मुझे दिखाई दिया कि एक बला चार टांगों वाली काले रंग की जिसका आकार भेड़ जैसा था और बड़े बड़े बाल थे और बड़े बड़े पंजे थे मुझ पर हमला करने लगी और मेरे दिल में डाला गया कि यह मिर्गी का रोग है। तब मैं ने अपना दाहिना हाथ उसके सीने पर ज़ोर से मारा और कहा दूर हो तेरा मुझ में हिस्सा नहीं। तब ख़ुदा तआला जानता है कि इसके बाद वे भयानक बीमारियां जाती रहीं तथा वह कठोर दर्द बिल्कुल जाता रहा केवल सिर में चक्कर कभी कभी आता था (अर्थात चक्करों की तकलीफ़ कभी कभी होती थी) ताकि दो चादरों की भविष्य वाणी में रुकावट न आवे। (मसीह मौऊद के बारे में यह भी भविष्य वाणी है कि वह दो पीली चादरों में होगा और उन दो पीली चादरों से अभिप्रायः दो रोग हैं। पहली तो यही फ़रमाई चक्करों की बीमारी, फ़रमाया) दूसरा रोग मधुमेह लगभग बीस वर्षों से जो मुझे है। इस निशान का भी पहले वर्णन हो चुका है। एक दिन मेरे विचार में आया कि डॉक्टरों के अनुसंधान के अनुसार मधुमेह का परिणाम या तो नुज़ूलुल माअ होता है। सो उसी समय मुझे नुज़ूलुल माअ के सम्बंध में इलहाम हुआ। नज़्ज़लत نزلت الرحمة على ثلث العين و على الاخرين अर्थात तीन अंगों पर रहमत नाज़िल की गई, आँख और दो अन्य अंगों पर। और फिर जब कार्बनकल के रोग का विचार मेरे मन में आया तो इलहाम हुआ- अस्सलामु अलैकुम। सो एक लम्बी आयु हो गई कि मैं इन बलाओं से सुरक्षित हूँ।

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब की बीमारी के सम्बंध में बयान फ़रमाते हैं, इनका वर्णन पिछले ख़ुत्बः में हुआ था, हज़रत मुस्लेह मौऊद के संदर्भ में कि जब उनकी वफ़ात हुई तो हज़रत मुस्लेह मौऊद को बड़ा सदमा हुआ था। इस प्रकार उनका एक विशेष स्थान था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उनकी बीमारी में उनके लिए भी दुआ करते रहे और इसी विषय में एक इलहाम का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि पिछले साल में अर्थात 11 अक्तूबर 1905 को बुद्धवार के दिन हमारे एक निष्ठावान दोस्त अर्थात मौलवी अब्दुल करीम साहब मरहूम इसी बीमारी कार्बनकल अर्थात कैंसर से फ़ौत हो गए थे। उनके लिए मैं ने बड़ी दुआ की थी परन्तु एक भी इलहाम उनके विषय में संतुष्टि देने वाला न था बल्कि बार बार यही इलहाम होते रहे कि कफ़न में लपेटा गया, 47 वर्ष की आयु, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। ان المنايا لا تطيش سهامها अर्थात मौतों के तीर व्यर्थ नहीं जाते। जब इस पर भी दुआ की गई तो इलहाम हुआ कि یاایھاالناس اعبدوا ربکم الذی خلقکم अर्थात ऐ लोगो, तुम उस ख़ुदा की उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया है अर्थात उसी को अपने कामों का बनाने वाला समझो और उसी पर भरोसा रखो। क्या तुम दुनिया के जीवन को धारण करते हो। इसमें यह संकेत था कि किसी के वजूद को इतना आवश्यक समझना कि उसके मरने से बड़ा संकट होगा, एक प्रकार का शिर्क है। और उसके जीवन के लिए अत्यंत शक्ति लगा देना एक प्रकार की पूजा है। इसके बाद मैं ख़ामोश हो गया और समझ लिया कि उसकी मृत्यु निश्चित है। अतः वह 11 अक्तूबर 1905 को बुद्ध के दिन असर के समय इस नष्ट होने वाली दुनिया से चले गए। वह दर्द जो उनके लिए दुआ करने में मेरे दिन पर अवतरित हुआ था ख़ुदा ने उसको विस्मित न किया और चाहा कि इस असफलता का एक अन्य सफलता के साथ बदला दे। अतः इस निशान के लिए सेठ अब्दुर्रहमान साहब का चयन कर लिया। यद्यपि ख़ुदा ने अब्दुल करीम को हमसे ले लिया तो अब्दुर्रहमान को पुनः हमें दे दिया। वही रोग उनको लग गया और अन्ततः वे इसी बन्दे की दुआ से स्वस्थ हो गए, फ़लमदु लिल्लाहि अला ज़ालिक। फ़रमाते हैं- मेरे सैंकड़ों बार का अनुभव है कि ख़ुदा ऐसा करीम व रहीम है कि जब अपनी मसलेहत से एक दुआ को स्वीकार नहीं करता तो उसके बदले में अन्या कोई दुआ क़बूल कर लेता है (यहां दुआ की जो रूह है, फ़लास्फ़ी है उसका भी पता चल गया। कुछ लोग कहते हैं कि हमारी दुआएं क़बूल नहीं हुईं तो नबियों की भी दुआएं कई बार यदि अल्लाह की तक़दीर है तो क़बूल नहीं होतीं परन्तु उसके बदले में दूसरी कोई दुआ क़बूल हो जाती है। तो फ़रमाया) कि एक दुआ को स्वीकार नहीं करता तो उसके बदले में कोई अन्य दुआ मंज़ूर कर लेता है जो उसके समान होती है। फिर अपनी सत्यता के प्रमाण के रूप में जो क़ुरआन करीम की भविष्य वाणियां हैं, उनमें एक भविष्य वाणी जो सवारी है, उसके सम्बंध में है। उसके विषय में आप फ़रमाते हैं कि- एक सवारी का निकलना है, निशान जो मसीह मौऊद के प्रकट होने का विशेष निशान है। जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है। एक नई सवारी का निकलना है जो मसीह मौऊद के प्रकट होने की विशेष निशानी है जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है واذاالعشار عطلت अर्थात आख़री ज़माना वह है जब ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी। और ऐसा ही एक मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि- ولیترکن القلاص فلا یسعٰی علیھا अर्थात उस ज़माने में ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी और कोई उनपर यात्रा नहीं करेगा। हज के दिनों में मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा की ओर ऊंटनियों

पर यात्रा होती है अब वे दिन बहुत क़रीब हैं कि इस सफ़र के लिए रेल तैय्यार हो जाएगी तब इस सफ़र से प्रमाणित होगा कि ولیترکن القلاص فلا یسعٰی علیھا (इसके पश्चात हुज़ूर अनवर ने अब्दुल्लाह आथम के बारे में हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की भविष्य वाणी का सविस्तार वर्णन फ़रमाया)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह बयान फ़रमाते हुए कि क़ुरआन करीम की बरकतें इंसानों की शक्ति से अत्यंत उच्च तथा मानने वालों को निशान दिखाकर वह विश्वस्त ज्ञान अता फ़रमाता है, अता करता है क़ुरआन करीम और फिर इस बरकत से चमत्कार प्रकट होते हैं। बड़े अदभुत निशान प्रकट होते हैं। आप फ़रमाते हैं कि मैं इन क़ुरआन की बरकतों को कहानी के रूप में बयान नहीं करता। जो बरकतें हैं क़ुरआन करीम की आपको वे केवल क़िस्से कहानियां नहीं हैं बल्कि वे चमत्कार पेश करता हूँ कि जो स्वंय मुझको दिखाए गए हैं। वे समस्त चमत्कार लगभग एक लाख हैं बल्कि सम्भतः वे एक लाख से भी अधिक हैं। ख़ुदा ने क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया था कि जो व्यक्ति मेरे इस कलाम का अनुसरण करे वह न केवल इस किताब के चमत्कारों पर ईमान लाएगा बल्कि उसको भी चमत्कार दिए जाएंगे। इस लिए स्वंय मैं ने वे चमत्कार ख़ुदा के कलाम के प्रभाव से पाए जो इंसानों की शक्ति से बुलन्द तथा केवल ख़ुदा का कार्य हैं। वे भूचाल जो धरती पर आए, वह ताऊन जो दुनिया को खा रही है। वे उन्हीं चमत्कारों में से हैं जो मुझे दिखाए गए। मैं ने इन कठिनाइयों के नाम व निशानों को पच्चीस वर्ष पहले अपनी किताब बराहीने अहमदिया में, इन घटनाओं के समाचारों को भविष्य वाणी के रूप में प्रकाशित कर दिया था कि ये कठिनाइयां आने वाली हैं। अतः वे कठिनाइयां आ गईं और अभी बस नहीं बल्कि आने वाली कठिनाइयां, इन कठिनाइयों से बहुत अधिक हैं। एक भयानक महामारी भी प्रकट होने वाली है जो इस देश तथा अन्य देशों में प्रकट होगी तथा अत्यधिक परेशान करेगी। और जो कर्म हैं अब दुनिया के और ख़ुदा से जिस प्रकार दूर हट रहे हैं और न केवल दूर हट रहे हैं, वे उन कठिनाइयों को फिर बुलाने के लिए स्वंय उनके अनुसार जल्दी कर्म कर रहे हैं। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए और अहमदियों को दुआएं करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हमें अपने कर्मों को ठीक रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। ये मुस्लिम देशों में भी जहां इसी प्रकार की प्रस्थितियां हैं। मुसलमानों का अपना हाल भी यही है कि ख़ुदा से दूर हो रहे हैं और जो बुलाने वाले जिस प्रकार आपने फ़रमाया कि जो कह रहा है सही रास्ते पर चलो, उसके साथ हंसी होगी उपहास होगा और उस पर यह कहा जाएगा कि यह फ़साद फैलाने की साज़िश अथवा फैलाने का प्रयास कर रहा है।

अब ख़ुदा तआला ने निश्चय किया है कि फिर नए सिरे से इन शक्तियों को जीवित करे। वह ख़ुदा जो सदैव یحی الارض بعد موتھا करता रहा है, उसने इरादा किया है और इसके लिए कई मार्गों को अपनाया है। एक ओर दूत को भेज दिया गया है जो विनय पूर्वक निमन्त्रण दे तथा लोगों को उपदेश दे। (अर्थात अपने बारे में फ़रमा रहे हैं) दूसरी ओर ज्ञान व सभ्यता की उन्नति है तथा बुद्धि का विकास होता जाता है। भावार्थ यह है कि और अधिक बुद्धि में विकास हो रहा है। शिक्षा एंव कला का विकास हो रहा है। फ़रमाया- वार्ता की पूर्ति के लिए आसमान निशान ज़ाहिर कर रहा है। बहुत से निशान जो आपके ज़माने में भी ज़ाहिर हुए। तूफ़ान के भी, चाँद और सूरज ग्रहण के भी, भूचालों के भी। फिर फ़रमाया- और फिर प्रकोप के निशानों का क्रम भी जारी रखा गया जिनमें से महामारी का भी एक निशान है और अब जो इतनी कठोरता के साथ फैल रही है। (उस ज़ामने में जो थी कभी पिछली पीढ़ियों ने न देखी होगी) और बहुत से लोग हैं जो इन निशानों तथा आयतों से लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस शिक्षा को समझते हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे को समझते हैं और फिर इसको क़बूल करते हैं। और हर क्षेत्र में और हर समुदाय में और हर देश में ऐसे लोग पाए जाते हैं जो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सैंकड़ों हज़ारों बल्कि अब तो लाखों की संख्या में जमाअत में शामिल हो रहे हैं। फिर एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं कि- याद रखो कि इन चमत्कारों तथा भविष्य वाणियों का उदाहरण जो मेरे हाथ पर प्रकट हुए तथा प्रकट हो रहे हैं। कमिय्यत और कैफ़ियत और सबूत के लिहाज़ से हर गिज़ न पेश कर सकोगे, ख़्वाह तलाश करते करते मर भी जाओ। बल्कि अब तो ख़ुदा तआला की फ़ेअली शहादतें भी निशानात ऐसे बन चुके हैं जिनमें रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा होता जा रहा है और हम रोज़ देखते हैं। अब आजकल दुनिया का ध्यान जा रहा है और जमाअत का पैग़ाम भी सुन रहे हैं। यह भी निशानों में से एक निशान है कि मीडिया का इस ओर ध्यान आकर्षित हो रहा है किसी भी बहाने से किसी भी कारण से। तो इस प्रकार निशान तो हर बुद्धिमान व्यक्ति के लिए हर रोज़ ज़ाहिर हो रहे हैं। फिर आप एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि- यह बात याद रखने के योगय है कि ख़ुदा तआला अपने सिलसिले को प्रमाणित किए बिना नहीं छोड़ेगा। वह स्वंय फ़रमाता है जो बराहीने अहमदिया में लिखा है कि दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको क़बूल न किया लेकिन ख़ुदा तआला उसे क़बूल करेगा और बड़े ज़ोर आवर हमलों से उसकी सच्चाई ज़ाहिर करेगा। जिन लोगों ने इन्कार किया और जो इन्कार के लिए उत्सुक हैं उनके लिए अपमान और अनादर निश्चित है। उन्होंने यह भी न सोचा कि यदि यह इंसान का घड़ा हुआ झूठ होता तो कब का नष्ट हो जाता क्यूंकि ख़ुदा तआला झूठे

का ऐसा दुश्मन है कि दुनिया में ऐसा किसी का दुश्मन नहीं। मेरे साथ वही है जो मेरी इच्छा के लिए अपनी इच्छा को छोड़ता है और अपनी अभिलाषाओं को छोड़ने तथा धारण करने के हेतु मुझे अधिकारी बनाता है। अब मैं जानता हूँ कि निशानों के विषय में बहुत कुछ लिख चुका हूँ और ख़ुदा तआला जानता है कि यह बात सही है तथा उचित है कि अब तक तीन लगभग हज़ार या कुछ अधिक बातें मेरे लिए ख़ुदा तआला की ओर से प्रकट हुई हैं जो इंसान की शक्तियों से बाहर हैं तथा भविष्य में इनका मार्ग बन्द नहीं। अल्लाह तआला दुनिया को भी बुद्धि प्रदान करे कि निशानों को समझने वाले भी हों और केवल निशानों की मांग अपनी बुद्धि तथा अभिलाषा के अनुसार करने वाले न हों बल्कि समय की आवश्यकता तथा ज़माने की आवाज़ तथा प्रस्थिति जो ख़ुदा तआला के दूत की प्रतीक्षा को प्रकट कर रही है, उसको सुनें। उसको समझने का प्रयास करें। अल्लाह तआला के भेजे हुए को तलाश करके मानने वाले भी हों ताकि इस दुनिया में फ़साद समाप्त हो सके।

आज एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाउंगा मुकर्रम ग़ुलाम अहमद क़ादिर साहब दर्वेश क़ादियान का पुत्र मुकर्रम अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहब मरहूम। यह 12 नवम्बर 2014 को नव्वे वर्ष की आयु में अल्लाह तआला के विधान के अनुसार वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आप तीन सौ तेरह दर्वेशों में शामिल थे। अहमदियत के इतिहास में इनका 189 वाँ नम्बर है। अप्रैल 1925 में शादिवाल, गुजरात में पैदा हुए। आरम्भिक शिक्षा भी वहीं प्राप्त की, सेना में भरती हो गए। नौकरी को चार साल हुए थे कि हज़रत मुस्लेह मौऊद की तहरीक पर मर्कज़ की सुरक्षा हेतु, नौजवान अपने जीवन वक़्फ़ करें, क़ादियान आए 1947 में यहां हाज़िर हो गए। तबलीग़ का भी बड़ा शौक़ था, विशेष रूप से सिक्खों को तबलीग़ किया करते थे। बीमारी तथा कमज़ोरी के बावजूद आख़िरी समय तक मस्जिद मुबारक में जाकर नमाज़ अदा किया करते थे। अल्लाह तआला इनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए।

इनके अतिरिक्त दो अन्य दर्वेश भी जो कुछ महीने पहले फ़ौत हुए थे उनका जनाज़ह ग़ायब तो पहले पढ़ा गया था परन्तु पवित्र वर्णन नहीं हुआ था उनका भी आज वर्णन करना चाहता हूँ। अहबाब उनको और उनकी संतानों को भी अपनी दुआओं में याद रखें। इन दर्वेशों ने बड़ी बड़ी क़ुरबानियां दी हुई हैं। एक लम्बे समय तक बड़ी दीनता के साथ, बड़ी कठिन प्रस्थितियों में, बड़े मामूली गुज़ारे पर क़ादियान में दिन व्यतीत किए हैं तथा शआयरल्लाह की सुरक्षा का हक़ अदा किया है। इनमें से एक तो हैं मिर्ज़ा मुहम्मद इक़बाल साहब जो मिर्ज़ा आदम बेग साहब के बेटे थे। यह 11 जून 2014 को फ़ौत हुए थे। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। इनके दादा मिर्ज़ा रसूल बेग साहब सहाबी थे। नाना मिर्ज़ा रियाज़ बेग साहब भी सहाबी थे। ये आरम्भिक तीन सौ तेरह दर्वेशों में से थे।

फिर चौधरी मंज़ूर अहमद साहब चीमा, यह 26 जौलाई को 94 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आप चौधरी नूर अली साहब चीमा सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बड़े बेटे थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी0 ने जब मर्कज़ की हिफ़ाज़त के लिए जमाअत के लोगों को तहरीक फ़रमाई तो चूंकि आप बर्तानवी सेना में रह चुके थे इस लिए आपने अपनी सेवा प्रस्तुत की तथा दर्वेशी का सौभागय प्राप्त किया। अधिक आयु होने के बावजूद लम्बे समय तक बेसाखी के सहारे मस्जिद में नमाज़ के लिए हाज़िर होते रहे। निष्ठावान, सुन्दर स्वभाव, प्रसन्न चित्त, कृपालु तथा मुहब्बत करने वाले इंसान थे, मूसी थे।

KhulasaKhutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar AyyadahullhuTa'la 21.11.2014

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *OfficAnsarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*